

संपादक

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

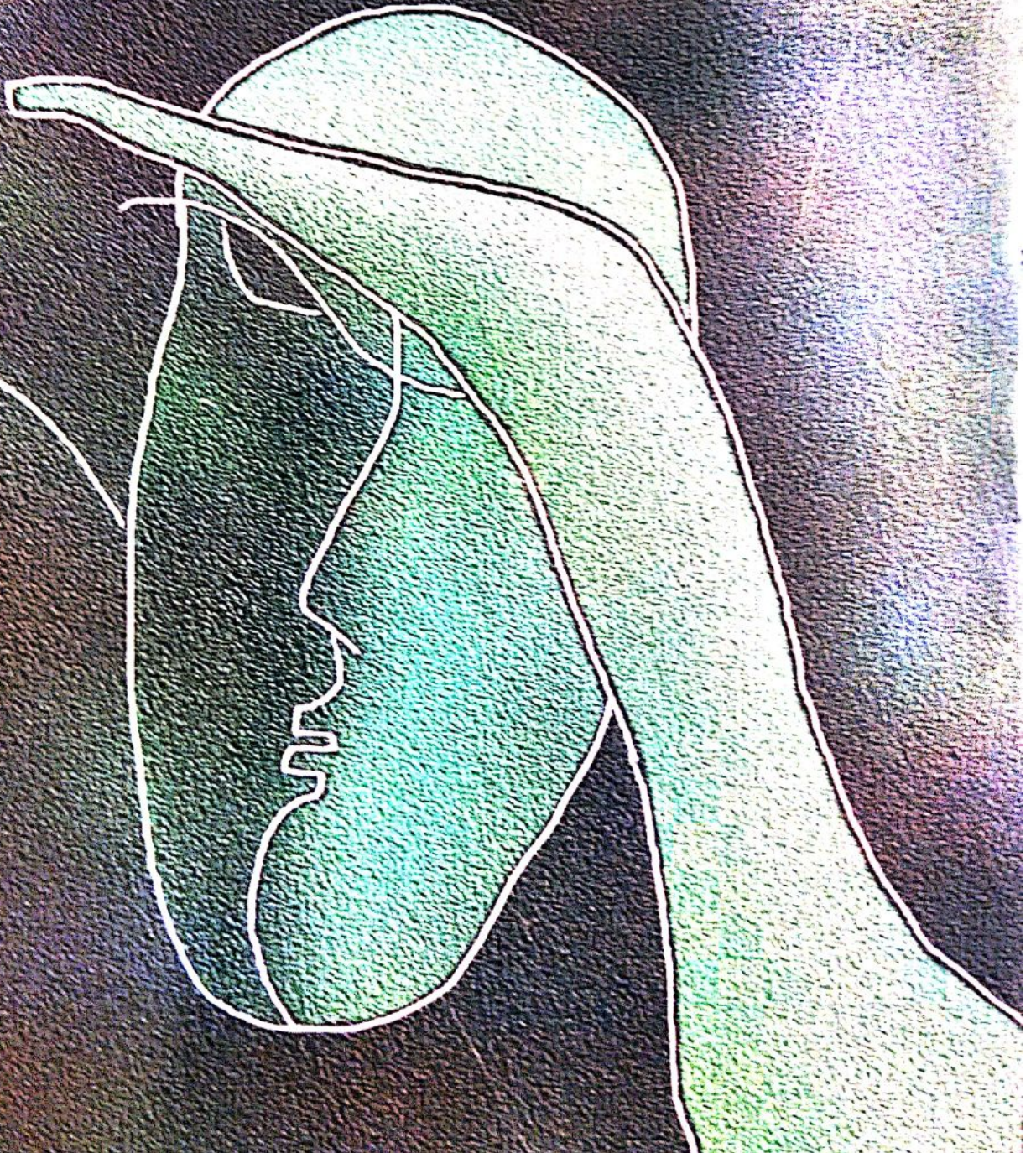
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0075-725X

शोध दिशा

56

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL



शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 56/2

अक्टूबर-दिसंबर 2021

300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,

बिजनौर 246701 (उ०प्र०)

फोन : 0124-4076565, 09557746346

ई-मेल : shodhdisha@gmail.com

वेब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा

डॉ० मीना अग्रवाल

ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,

गुडगाँव (हरियाणा)

फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०

डॉ० अनुभूति

सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स

बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा

फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

07838090732

प्रबंध संपादक

डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक

डॉ० शंकर क्षेम

प्रमोद सागर

उपसंपादक

डॉ० अशोककुमार

डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक

गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता

अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता

ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए

संस्थागत : छह हजार रुपए

वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए

यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजे। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसेट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

ISSN 0975-735X

अक्टूबर-दिसंबर 2021 ■ 1

अनुक्रम

प्रेमचंद की कहानियों में मजदूर-जीवन/ रमन सैनी	17
राष्ट्रभाषा हिंदी : राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक आर्थिक विकास/ सुरेन्द्र कुमार पटेल	21
हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जीवनमूल्य/ निर्मला मीना, डॉ० अशोक कुमार मीना	25
प्रयोगवादी अज्ञेय की कविताओं में प्रतीक तथा बिंब चित्रण/ डॉ० राखी उपाध्याय	28
महामानव ज्योतिबा फुले/ श्रीमती श्रद्धा कोरे पवार	34
महिला सौंदर्यीकरण : महिलाओं के समक्ष उभरते प्रतिमान एवं चुनौतियाँ/ डॉ० सुमित्रा शर्मा	37
नवजागरणकालीन स्त्री-काव्य लेखन में युगीन चेतना/ कपिल कुमार गौतम, प्रो० चंदा बैन	43
बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार में डॉ० भीमराव अंबेडकर का योगदान/ कमलेश	51
महादेवी के काव्य में रहस्यवाद/ मोनिका शर्मा	54
प्रासंगिक कवि : अरुण कमल/ डॉ० प्रज्ञा त्रिवेदी	57
समतामूलक लोकतंत्र एवं आर्थिक पुनर्निर्माण : एम०एन० राय तथा जयप्रकाश नारायण की वैकल्पिक दृष्टि/ डॉ० विकास यादव	61
भारतीय उच्च शिक्षा और दलित समाज/ वीरेन्द्र कुमार	67
संतकाव्य परंपरा में कबीर की प्रासंगिकता/ डॉ० निर्भय शर्मा	73
जयशंकर प्रसाद की कहानियों में स्वाभिमान का संदेश/ डॉ० समिउल्ला साब	79
हिंदी पत्रकारिता का भाषा भाव : एक विश्लेषण/ प्रो० माला मिश्र	83
समकालीन अस्मिता विमर्श और हिंदी सिनेमा : एक विश्लेषण/ डॉ० राकेश कुमार दुबे	88
हिंदी के विकास में मराठी भाषी साहित्यकारों का योगदान/ विश्वनाथ सुतार	94
विश्व हिंदू परिषद का आध्यात्मिक संचार : अयोध्या/ मनोज कुमार भट्ट (मनोज लीला भट्ट), डॉ० तरुणा गौड़	98
समकालीन कविता में बालशोषण का स्वर/ रीना कुमारी	102
जल टूटता हुआ : ग्रामीण जीवन का यथार्थ/ डॉ० बेबी राघू कोलते	106
सुशीला टाकभौरे की कहानी 'सिलिया' में दलित-विमर्श/ डॉ० बेबी कोलते	113
आदिवासी कविता में विस्थापन का दर्द/ डॉ० मंदाकिनी मीना	117
आम जनजीवन एवं मटियानी का साहित्य/ सुबिया फैसल, डॉ० रेशमा अंसारी	123

नवजागरणकालीन स्त्री-काव्य लेखन में युगीन चेतना

कपिल कुमार गौतम

शोध अध्येता, हिंदी विभाग

डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

प्रो० चंदा बैन

विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग

डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

नवजागरण काल में साहित्य, समाज और संस्कृति शोधन एवं परिष्करण की अवस्था से गुजर रहे थे। राजनीतिक क्षेत्र में भी अनिश्चितता और संघर्ष बढ़ता जा रहा था। ब्रिटिश शासन से त्रस्त जनता आक्रोश से भरी हुई थी। उसी के समानांतर समाज के बीच व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन सक्रिय थे। परिस्थितिस्वरूप स्त्री-चेतना का उदय हुआ और विभिन्न आंदोलनों में महिलाओं ने भी व्यापक स्तर पर भाग लिया। चूँकि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वरूप को आकार प्रदान किए जाने के क्रम में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है इसलिए महिलाओं ने जागृति हेतु काव्य को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना आरंभ किया।

नवजागरणकालीन करीब दो दर्जन कवयित्रियों का उल्लेख मिश्रबंधुओं के द्वारा किया गया है। 'मिश्रबंधु-विनोद' के पूर्व नूतन परिपाटी अध्याय के अंतर्गत संवत् 1945 से 1960 के दौर की अर्थात् भारतेंदुयुग के उत्तरार्द्ध की कवयित्रियों के संदर्भ में मिश्रबंधुओं ने लिखा—'स्त्री-कवियों में इस काल बाघेली विष्णुप्रसाद कुँवरी, भोगवतीदेवी, कनकलता, चंद्रकलाबाई, हेमंतकुमारी चौधरी, बुंदेलबाला, गोप्यदेवी, भाग्यवतीदेवी, ज्वालादेवी, इंदुबाल, गोपालदेवी आदि के नाम आते हैं। इस नूतन परिपाटी-काल के पहले और पीछे भी कई स्त्री-कवि हुई हैं। उपर्युक्त स्त्री-कवियों में कई उत्कृष्ट रचना भी करती थीं।' तो वहीं मिश्र बंधुओं ने उत्तर नूतन परिपाटी अध्याय में संवत् 1961 से 1975 अर्थात् द्विवेदीयुगीन कवयित्रियों के विषय में लिखा—'स्त्री-लेखिकाओं या कवियों में मुख्यतया रानी रामप्रियाजी, यशोदादेवी, सरस्वतीदेवी, रमादेवी त्रिपाठी, रामेश्वरीदेवी नेहरू, हेमंतकुमारीदेवी, चंदाबाई, प्रेमकुँवरि, सुभद्राकुमारी चौहान तथा रत्नावती शर्मा के नाम इस काल में आते हैं। इनमें से सुभद्राकुमारी चौहान तथा हेमंतकुमारी देवी की कविता एवं गल्पों की अच्छी प्रसिद्धि है और रामेश्वरी नेहरू सुलेखिका अथवा संपादिका हैं। उपर्युक्त इतर देवियों की भी रचनाएँ कभी-कभी उच्चकोटि की होती हैं। बड़े हर्ष की बात है कि हमारा स्त्री-समाज इस छोटे से काल में इतनी देवियाँ साहित्य-क्षेत्र में उपस्थित कर सका। इन तथा ऐसी ही अन्य बातों से भारतोन्नति की आशा पाई जाती है।' वास्तव में इस युग में कवयित्रियों का इतनी बड़ी संख्या में होना, महिलाओं में शिक्षा और साहित्य के प्रति बढ़ते रुझान का परिणाम था। इन्हीं कारणों से मिश्र-बंधुओं ने भी महिलाओं की भागीदारी से भारतवर्ष की उन्नति की आशा महसूस की।

भारतेंदु एवं द्विवेदीयुगीन अर्थात् नवजागरणकालीन पुरुष कवियों के काव्य में आधुनिकता

के प्रभाव से जो नवीन परिवर्तन और नूतन प्रवृत्तियों का प्रवाह परिलक्षित होता है, कवयित्रियों के काव्य में भी नूतनता की वही परिपाटी संचारित हो थी। भारतेंदु एवं द्विवेदीयुग में मुख्यतः पत्र-पत्रिकाओं में समस्यापूर्ति, काव्य-लेखन में ब्रज और खड़ीबोली का संघर्ष, भक्तिकाव्य, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, स्त्री-चेतना, स्वाधीनता-संघर्ष का प्रभाव और नवीन ऊर्जा का प्रवाह इत्यादि देखा जाता है। कवयित्रियों ने भी अपनी कविताओं में इन्हीं पक्षों को प्राथमिकता प्रदान की है। सुनंदा पाराशर ने नवजागरणकालीन स्त्री-चेतना के संदर्भ में लिखा—‘स्त्री-समाज में अपनी जगह बनाने के लिए छटपटाहट महसूस की जाने लगी थी। उन्हें स्वयं भी यह अहसास गंभीरता से होने लगा था कि वे समाज में बराबरी की अधिकारी हैं, उन्हें भी ये अधिकार मिलने चाहिए। उस समय की पत्रिकाओं में लेखिकाओं की यह माँग बराबर रही कि देश का कल्याण तब ही हो सकता है जब रीतिरिवाजों के बंधनों को तोड़कर वह स्वयं उन बातों को ग्रहण करने को तत्पर हो जाएँ, जो देश के लिए लाभकारी हैं।’¹³ पत्र-पत्रिकाओं ने महिलाओं को बदलते समाज और नवजागरणकालीन चेतना से सीधे-सीधे जोड़ने का काम किया। नवजागरणकाल में जहाँ स्त्री का की चारदीवारों तक सीमित थी, वहाँ उसने भागवत भक्ति को काव्य का आधार बनाया। किंतु जहाँ महिलाओं में चेतना जाग्रत हुई और उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग प्राप्त हुआ, वहाँ उन्होंने अपने अधिकार, अस्मिता और स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाई। दोनों ही अवस्थाओं में महिलाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को केंद्र में रखते हुए काव्य-लेखन किया।

कवयित्री कमलकुमारी ‘जुगलप्रिया’ छतरपुर के महाराजा विश्वनाथसिंह की महारानी थीं। इन्होंने नवजागरणकाल में भक्तिकाव्य लिखा। किंतु इनकी रचनाओं में तद्युगीन समाज में व्याप्त बुराइयों का विरोध भी किया गया है। साधु-संतों के वेश में समाज के बीच अनेक ढोंगी-पाखंडी विचरण करते हैं, जो वेशभूषा से तो संत प्रतीत होते हैं, किंतु उनका चरित्र कपटी एवं दुराचारी होता है। ‘जुगलप्रिया’ महिलाओं को ऐसे दुष्ट प्रवृत्ति के पाखंडियों से दूर रहने का संदेश देते हुए लिखती हैं—‘बगुला-भक्तन सों डरिये री। इक पग ठाढ़े ध्यान करत हैं दीन-मीन लों किमि बचिये री। ऊपर तें उज्ज्वल रँग दीखत हिए कपट हिंसक लखिये री।’¹⁴ ‘जुगलप्रिया’ से पूर्वमध्यकालीन निर्गुण काव्य-लेखन करने वाली, सहजोबाई और दयाबाई जैसी कवयित्रियों ने भी साधु-संतों के गुण-अवगुण का उल्लेख किया है। उनके काव्य में साधु-संतों को व्यवहार, चरित्र और जीवनोपयोगी नियमों के लिए निर्देशित किया गया है। जैसे सहजोबाई लिखती हैं—‘साधु सोई जो काया साढ़े। तजि आलस अरु वाद विवादे।’¹⁵ किंतु आधुनिकयुग में ‘जुगलप्रिया’ इस परिपाटी को परिवर्तित करते हुए, साधु-संतों को निर्देशित करने की अपेक्षा कपटी प्रवृत्ति के छद्म संतों के प्रति समाज को सचेत एवं जागरूक करने का कार्य करती हैं।

‘रामप्रिया’ उपनाम से रामभक्ति काव्य-लेखन करने वाली प्रतापगढ़ की महारानी रघुराज कुँवर एक शिक्षित और विदुषी महिला थीं। इनके काव्य में भक्ति के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम की भावना भी समाहित थी। ‘रामप्रिया’ ने कई देशों की यात्रा भी की थी और इंग्लैंड की महारानी से भी भेंट की थी, उसी का प्रभाव था कि अपने आत्मबल के साथ वह विश्वविजय करने की इच्छा प्रकट करते हुए लिखती हैं—‘विश्व-विजय अब कीन्हो चाहत मम दृढ़ता लखि भाजि भली री।’¹⁶ यह ऊर्जा नवजागरण की युगीन चेतना से शिक्षित महिलाओं में संचारित हो रही थी। इसी प्रकार राजमाता दियरारानी रघुवंशकुमारी ने कविताओं में अपनी व्यष्टि पीढ़ा को समष्टि रूप प्रदान करते हुए, तत्कालीन परिवेश में महिलाओं की दारुण दशा को प्रकट करते हुए लिखा—‘तन दुख

मन दुख, नैन दुख हिय भे दुख की खान। मानो कबहूँ ना रही, वह सुख से पहचान।” कवयित्री ज्वालादेवी ने भी स्त्री समस्याओं पर केंद्रित काव्य-कृति ‘नारी विनय’ की रचना की, जिसके अंतर्गत भक्तिभाव के साथ-साथ स्त्री-चेतना भी देखने को मिलती है। वह लिखती हैं—

प्रभु आश करे है पुत्री तुमारी। सुन विनती जगदीश हमारी।
हम अतिमूर्ख भई हैं सारी। जिम रात्री होवे औंधियारी।
हम सब होय न कोई दुखारी। निर अपराध जायँ हम मारी।
माता पिता कु नहीं हम प्यारी। सम दृष्टि क्यों दीन विसारी।⁸

वास्तव में तदयुगीन समाज की शिक्षित महिलाओं में यह चेतना जाग्रत हो चुकी थी कि उनके साथ किया जाने वाला व्यवहार उचित नहीं है, किंतु उनके अंदर समाज का विरोध करने की क्षमता का अभी विकास नहीं हुआ था। इसीलिए नवजागरण काल में भक्तिपरक काव्य लिखने वाली ‘जुगलप्रिया’, ‘रामप्रिया’, राजमाता दियरा और ज्वालादेवी जैसी कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं में नारी की सोचनीय दशा के लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया है। न ही वे समाज और व्यवस्था पर दोष अथवा आरोप-प्रत्यारोप करती हैं। बल्कि ये सभी काव्यकोकिलाएँ केवल ईश्वर से प्रार्थना और अनुनय-विनय करके अपनी दशा को सुधारने का निवेदन करती हैं। जागरूकता के साथ भी कवयित्रियों के काव्य में अनुग्रह एवं विनम्रता का भाव ही परिलक्षित होता है।

विचारणीय यह भी है कि उक्त कवयित्रियाँ नवजागरण के पूर्वार्द्ध में लेखनकार्य कर रही थीं। तब स्त्री-जागृति तो संचारित हो रही थी, किंतु उनके संचालक मुख्य रूप से पुरुष ही थे, जिसके कारण महिलाएँ अपनी खराब दशा पर विचार करने में समर्थ तो हो रही थीं, किंतु उस दशा के मूल कारण पर उन्होंने विचार नहीं किया, केवल ईश्वर से परिवर्तन एवं सुधार की अपेक्षा करती रहीं। जब नवजागरण के उत्तरार्द्ध में स्त्री-चेतना की जिम्मेदारी महिलाओं ने अपने कंधों पर ली। तब स्त्री चेतना में परिवर्तन आया और महिलाएँ अपनी स्थिति के कारण और निवारण दोनों की बात करती हुई देखी गई। इस परिवर्तन से स्त्री-लेखन की केंद्रीय चेतना में भी परिवर्तन आया। जो कवयित्रियाँ नवजागरण के पूर्वार्द्ध में भक्ति और नीतिपरक काव्य लिख रही थीं, उन्होंने भी उत्तरार्द्ध में युगीन चेतना को आत्मसात किया। ऐसा परिवर्तन ज्वालादेवी के काव्य में दृष्टिगत होता है। जो प्रारंभिक कविताओं में लिखती हैं—‘प्रभु आश करे है पुत्री तुमारी। सुन विनती जगदीश हमारी।’⁹ वे ही आगे लिखती हैं—‘विद्याहीन पशू सम नारी। हमरा नामहि हुआ गंवारी। जबसे होई हमरी खुआरी। तबसे भारत हुआ भिखारी।’¹⁰ नवजागरण काल में कवयित्री ज्वालादेवी स्त्री-शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण कुंजी स्वीकार करती हैं। जिसके माध्यम से स्त्री के अधिकार और अस्मिता सुरक्षित किये जा सकते हैं। ज्वालादेवी भारत की दुर्दशा के लिए स्त्री की खराब दशा को ही जिम्मेदार मानती हैं। समाज में यही संदेश नवजागरण काल में समाज-सुधार आंदोलनों के माध्यम से प्रसारित हो रहा था। परिणामस्वरूप ज्वालादेवी जैसी लेखिकाएँ वास्तविकता से परिचित होकर कविताओं के माध्यम से समाज में चेतना का विस्तार करने का कार्य कर रही थीं।

मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जनपद के अंतर्गत पिपरिया नामक गाँव में जन्मी कवयित्री राजरानीदेवी की कर्मभूमि सागर शहर रहा है। इनके पति प्रशासनिक अधिकारी थे और हिंदी एकांकी के जनक डॉ॰ रामकुमार वर्मा इनके सुपुत्र थे। हिंदीकाव्य की कोकिलाएँ के संपादक द्वय गिरिजादत्त शुक्ल और ब्रजभूषण शुक्ल ने राजरानीदेवी को नई धारा की प्रथम कवयित्री की संज्ञा

देते हुए लिखा—‘भारतेंदु ने जो नवीन प्रकाश दिया, जिस नवीन संदेश की घोषणा की, वह था देशप्रेम। प्रेम विषय पर कविता करके उन्होंने अपना संबंध जैसे प्राचीनों से जोड़ रखा था, वैसे ही देशभक्ति विषयक हृदयद्रावक कविताएँ लिखकर उन्होंने सामयिक सामाजिक परिस्थितियों से भी अपना नाता निबाहा। प्रस्तुत शताब्दी की जिन अन्य देवियों का उल्लेख हम पहले कर आये हैं उन तक हरिश्चंद्र के इस संदेश की लहर नहीं पहुँच सकी थी; इस संदेश को पहुँचाने का काम राजरानीदेवी जैसी कवयित्रियों ने किया। इनकी कविताओं में जागरण है, देशप्रेम और देश-चिंता है।¹¹ युगीन चेतना के अनुरूप राजरानीदेवी ने खड़ीबोली में कविताएँ लिखीं। इनसे पूर्ववर्ती और कुछ इनके समकालीन कवयित्रियों ने भी अपनी समस्याओं को भगवतभक्ति का चोला डालकर प्रस्तुत किया। किंतु राजरानीदेवी ही पहली कवयित्री थीं, जिन्होंने स्त्री-चेतना, स्वाधीनता-संग्राम और समाज-सुधार की भावना जैसे युगीन संदर्भों को सीधे-सीधे अपनी रचनाओं में स्थान दिया। इन्होंने ‘सती संयुक्ता’ और ‘प्रमादा-प्रमोद’ दो काव्यकृतियों की रचना की। नवजागरणकाल में यह प्रथम अवसर था जब किसी कवयित्री ने दीनता या वेदना के स्थान पर महिलाओं को जाग्रत करने के लिए स्पष्ट साहसी, ओजपूर्ण शैली का प्रयोग किया। राजरानीदेवी महिलाओं का आह्वान करते हुए लिखती हैं—

देवियो! क्या पतन अपना देखकर,
नेत्र से आँसू निकलते हैं नहीं?
भाग्यहीना क्या स्वयं को लेखकर,
पाप से कलुषित हृदय जलते नहीं?¹²

राजरानीदेवी जैसा साहस आजमगढ़ की कवयित्री सरस्वती देवी के काव्य में भी देखने को मिलता है। किंतु उनका साहस सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर देखा जाता है। यह स्त्री-जीवन की विडंबना रही है कि गृहस्थी में आकर महिलाएँ शिक्षा-दीक्षा और पठन-पाठन से वंचित रह जाती हैं। विवाह के उपरान्त कवयित्री को लेखन-कौशल का विकास करने के अवसर नहीं मिल पाते हैं। समाज में इसी प्रकार प्रतिभासंपन्न स्त्रियाँ घर की चारदीवारों में अपनी प्रज्ञा का होम कर देती हैं। किंतु इस अवस्था के लिए सामाजिक और पारिवारिक बंधनों को जिम्मेदार घोषित करने का साहस उनमें नवजागरणकाल से ही उत्पन्न हुआ। सरस्वतीदेवी अपनी इसी व्यथा को व्यक्त करती हैं। विवाह के पश्चात् उनको काव्य-लेखन के उचित अवसर और साधन उपलब्ध नहीं हुए। उनकी कविता में आत्माभिव्यक्ति प्रकट न कर पाने की व्याकुलता एवं आत्मवेदन स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है, सरस्वतीदेवी की यह व्याकुलता नवजागरणकाल की देन थी—

जब लग मैं मैके रही लिखत पढ़त रहि नित।
अब घर पर परवस परी रहि नहीं सकति सुचित।
गृहकारज व्यवहार बहु परै संभारन मोहि।
लिखन पढ़न इक संग ही यह सब कैसे होहि।
समाचार के पत्र जे आवत हैं मम पास।
तिनके देखन के लिए मिलत न मोहिं सुपास।¹³

नवजागरणकालीन महिला लेखन में स्त्री-जागृति और देशभक्ति दोनों एक साथ गुँथे हुए हैं। राजरानीदेवी गुलाम भारत की दुरावस्था के लिए अतीत की ओर देखती हैं और आत्मसजग होकर देश की दुर्दशा के लिए आपसी फूट को सबसे अधिक जिम्मेदार मानते हुए लिखती हैं—‘हास से

यह देश हाए! पिछड़ गया, आज भी इतिहास देता है पता। हाय! कैसे फूट थी इस देश में, हो गया कैसे महा अपकर्ष है।¹⁴ वास्तव में युगीन यथार्थ से दूर रहने वाली महिलाओं में उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में राजनीतिक और सामाजिक चेतना का विस्तार होता है। इसी दौर में पुरुष कवियों ने भी जनसामान्य की समस्याओं को साहित्य में स्थान दिया, उन्हीं के अनुरूप कवयित्रियों ने भी देश की दशा का अवलोकन किया और जनसामान्य की समस्याओं पर केंद्रित मुद्दों को काव्य का विषय बनाया। प्रयागराज की कवयित्री रमादेवी के काव्य में स्त्री-चेतना और सामाजिक सजगता में वृद्धि परिलक्षित होती है। उन्होंने ब्रिटिश शासन और बढ़ती महंगाई से त्रस्त आम जनता के मानस की व्यथा को रेखांकित करते हुए लिखा—‘चीज भई महँगी है बाजार में गेहूँ लगा अब डेढ़ अढ़य्या। भूख रहैं तक ढाँक सकें नहिं भारत के सिसु लोग लुगैय्या।’¹⁵ रमादेवी ने ब्रिटिश प्रशासन की नीतियों और कार्यशैली पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए लिखा—

कूप तलावन सूख ‘रमा’ जल बैल बिके घर धान कहाँ है।

छीज गये पट भूख सतावन फागुन को डफ गान कहाँ है।

कोटि उपाय करे जनता अब कौंसिल में वह जान कहाँ है।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड करे कुछ तो अब भारत को अभिमान कहाँ है।¹⁶

अँग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरोध में लिखने के साथ-साथ, रमादेवी ने उन भारतवासियों से भी सवाल किए जो अँग्रेजों के कृपापात्र बने हुए थे। रमादेवी उस दौर में लेखन-कार्य कर रही थीं, जब भारत के धनाढ्य वर्ग में अँग्रेजों से पदलाभ और सम्मानित प्रशासनिक दायित्व प्राप्त करने की होड़ मची हुई थी। अँग्रेजों के सानिध्य के बदले देश हित को ताक पर रखने से भी ये लोग नहीं चूक रहे थे। रमादेवी ऐसे वर्ग के विरुद्ध व्यंग्यात्मक स्वर में लिखती हैं—

चाल चलते कौंसिलों में आप जाने के लिए।

सर हिलाने के सिवा क्या कर दिखाया आपने।

देश हित के लिए एक दो कदम चलते नहीं।

घिस न जावें पाँव खुद पै रहम खाया आपने।¹⁷

विवेच्ययुगीन कवयित्रियों में स्वाधीनता की अभिलाषा प्रबल हो रही थी, जिसके लिए कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं में स्वाधीनता-संग्राम के दौरान भारत की प्राचीन संस्कृति और वैभव की उत्कृष्टता के प्रचार से जनता में गौरव और उत्साह के भाव का संचार करने का प्रयास किया। राजदेवी पराधीन भारत के वैभव की चिंता व्यक्त करते हुए लिखती हैं—‘कहाँ गया पहले का वैभव कौन विपत अब घेरी है। हाय वीर भारत इस अवसर हुई दशा क्या तेरी है?’ राजदेवी अपनी कविताओं में केवल पराधीनता का विलाप ही नहीं करती हैं, वरन् पराधीनता से स्वाधीनता तक लेकर जाने वाला विश्वास भी उनकी कविताओं में है। राजदेवी की सजगता उनको देश की तद्युगीन दशा के प्रति चिंतित करती है, तो साथ ही उनकी सबलता एवं साहस, ऊर्जा प्रदान करता है और वे आत्मविश्वास के साथ लिखती हैं—

होई है भारत फेर सुखारी।

विद्या वेद सबै नर पढ़िहैं, होइहैं शिल्प कला पुनि जारी।

उत्तम शिक्षा सब नर लहिहैं, बनिहैं, इक समान नर नारी।

उच्च शिक्षिता पुत्री होइहैं, पुत्र सकल बनिहैं ब्रह्मचारी।

नहीं निज देश की निन्दा करिहैं, नहिं बनिहैं कपटी दुराचारी।
धीर गंभीर वीर सुत भारत, लेइहैं आपन काज संभारी।
निज पौरुष बल दर्ब्य कमइहैं, आलस तामस दूर निकारी।¹⁹

भारतवर्ष कई शताब्दियों तक गुलाम रहा है किंतु जनता के मध्य स्वाधीनता की जो चेतना नवजागरणकाल में उत्पन्न हुई, वह इससे पूर्व कभी नहीं हुई थी। समाज-सुधार आंदोलनों के प्रभाव से शिक्षा, समानता और जागरूकता का संदेश जन-जन में प्रसारित हो रहा था, जो जनमानस में एक संगठन, सकारात्मकता और उम्मीद का भाव प्रसारित कर रहा था। भारतवासियों के हृदय में आजादी और सुखद भविष्य की आशा बलवती हो रही थी। उसी के प्रभाव में कवयित्री राजदेवी भारत के सुखद भविष्य हेतु स्त्री-पुरुष सभी को एक समान शिक्षा, देश के प्रति सम्मान का भाव और युवाओं में पौरुष बल इत्यादि को महत्त्वपूर्ण मानती हैं। अपने पाठकों को देश, समाज एवं जाति की उन्नति हेतु जाग्रत करने के लिए ओजपूर्ण शैली में आह्वान करते हुए राजदेवी लिखती हैं—

है जागने का यह समय हे पाठको! बहु सो चुके,
अरु अब तलक धन समय अपना व्यर्थ में ही खो चुके।
जो कुछ बचा है धन समय उत्तम बनाना चाहिए,
निज देश-उन्नति जाति उन्नति में लगाना चाहिए।
हे देश हितकारी सुनो यह सोचना अब चाहिए,
इस देश सेवा के लिए यक यूथ होनी चाहिए।²⁰

इसी प्रकार युग की अनिवार्यता के अनुरूप कवयित्री गोपालदेवी भी अपनी कविताओं के माध्यम से भारतमाता के सपूतों को जाग्रत करने का प्रयत्न करती हैं। आलस को त्यागकर विद्या, बल, धन और धर्म कमाते हुए, भारतमाता के यश को विस्तारित करने का आग्रह करते हुए गोपालदेवी लिखती हैं—

हुआ सवेरा जागो भैया, खड़ी पुकारे प्यारी मैया।
सब अपने धन्धे में लगे, पर तुम आलस में ही पगे।
विद्या बल धन धर्म कमाओ, भारत माँ का यश फैलावो।²¹

कवयित्री 'बुंदेलबाला' हिंदी के यशस्वी लेखक लाला भगवानदीन की पत्नी थीं। लाला भगवानदीन शृंगारिक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हुए, किंतु उनकी पत्नी बुंदेलबाला युगीन चेतना से अधिक प्रभावित थीं। उनकी रचनाओं में सामाजिक समस्या, स्त्री-चेतना और देशभक्ति के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है। बुंदेलबाला ने अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर पराधीन भारत में महिलाओं, बच्चों और युवकों को जाग्रत करने के उद्देश्य से काव्य-लेखन किया। उनकी कविताओं के शीर्षक यथा 'चाहिए ऐसे बालक!', 'सावधान', 'माता और पुत्र की बातचीत' इत्यादि ही उनके उद्देश्यों को स्पष्ट करते हैं। बुंदेलबाला के काव्य में एक माता और एक देशभक्त महिला की छवि एक साथ देखने को मिलती है। उन्होंने युवाओं को भारतमाता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए प्रेरित किया। अपनी कविताओं में युवाओं को संबोधित करते हुए बुंदेलबाला ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि आदर्श तथा राष्ट्रीयता की भावना उनके रूप बलात् आरोपित न हो, बल्कि युवक अपने विवेक से अपने कर्म निश्चित करें—

जो करना है उसे करैं अपने निज हथन।

देश-भलाई हेत करें अभिलाषा लाखन।
 कठिन परिश्रम देखि न कबहूँ मन ते हारैं।
 भारी भार निहार न कबहूँ कन्धा डारैं।
 करें काज बनि कुल-कलंक कारिख प्रच्छालक।
 अब भारत माताहिं चाहिए ऐसे बालक।²²

निष्कर्षतः नवजागरणकालीन कवयित्रियों के काव्य में युगीन चेतना का प्रभाव व्यापक स्तर पर परिलक्षित होता है। इस युग में स्त्री-काव्य लेखन का विस्तार राजघरानों से लेकर मध्यवर्गीय प्रतिष्ठित परिवारों तक हुआ। काव्य-लेखन हेतु कहीं उनको सहज स्वीकार्यता और प्रोत्साहन मिला, तो कहीं उनको विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक बंधनों को चुनौती देकर आगे बढ़ने के क्रम में संघर्ष करना पड़ा। इन्हीं दो अलग-अलग अवस्थाओं में स्त्री-लेखन की दो धाराएँ इस युग में निर्मित होती हैं। राज परिवारों की महिलाओं पर अधिक बंधन थे और उनका अधिक झुकाव आध्यात्म की ओर था, जिसके कारण राजपरिवार की कवयित्री भागवत भक्तिपरक काव्य लिख रही थीं। युगीन चेतना के स्तर पर उनके काव्य में कहीं-कहीं सामाजिक बुराइयों के प्रति विरोध दिखाई देता है। किंतु वहाँ सामाजिक समस्याएँ भक्ति और नीति के साथ ही परोक्ष रूप से देखी जा सकती हैं। जबकि जिन कवयित्रियों का संबंध राजपरिवारों से नहीं था, उनकी भी सामाजिक और पारिवारिक समस्याएँ थीं, किंतु ये कवयित्रियाँ युगीन चेतना के प्रभावानुरूप समस्याओं के खिलाफ स्पष्ट आह्वानपरक और ओजपूर्ण शैली के साथ काव्य-लेखन कर रही थीं। सामाजिक समस्याओं के विरोध में बुंदेलबाला, राजरानीदेवी, ज्वालादेवी, रमादेवी और रामेश्वरी नेहरू जैसी कवयित्रियों को सीधे-सीधे उनके पति और पारिवारिक जनों का सहयोग मिला। इसलिए इन कवयित्रियों के काव्य में व्यापक स्तर पर युगीन चेतना दृष्टिगत होती है। ऐसी कवयित्रियों ने नवजागरणकालीन पुरुष कवियों की भाँति राष्ट्रीय चेतना, स्त्री-चेतना और सामाज सुधार जैसे विषयों को लेकर काव्य-लेखन किया। कवयित्रियों ने भी ब्रजभाषा को छोड़ते हुए, हिंदी खड़ीबोली में कविताएँ लिखीं। इनके काव्य-लेखन में तद्युगीन हिंदी साहित्य की मुख्य धारा के विषयों का प्रवाह ही आगे बढ़ रहा था। सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बंधनों और पूर्वाग्रहों से ग्रसित पुरुष मानसिकता ने भले ही इन कवयित्रियों को हिंदी साहित्येतिहास में स्थान न दिया हो, किंतु विवेच्य कवयित्रियाँ अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर लगातार नवजागरण कालीन हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहीं थी।

संदर्भ

1. मिश्रबंधु, मिश्रबंधु-विनोद (चतुर्थ भाग), गंगा-पुस्तक माला प्रकाशन, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० 1991, पृ० 143
2. मिश्रबंधु, मिश्रबंधु-विनोद (चतुर्थ भाग), पृ० 320
3. सुनंदा पराशर, हिंदी नवजागरण और स्त्री अस्मिता, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2017, पृ० 34
4. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री-कवि-कौमुदी, प्रस्तुति बलवंत कौर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018, पृ० 144
5. सहजोबाई, सहजप्रकाश, (संपा) पं० शिवनारायण शर्मा, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई, 1922, पृ० 32
6. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री-कवि-कौमुदी, पृ० 154
7. गिरिजादत्त शुक्ल और ब्रजभूषण शुक्ल, हिंदीकाव्य की कोकिलाएँ, भूमिका एवं प्रस्तुति गरिमा श्रीवास्तव,

- अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ० 96
8. ज्वालादेवी, नारी विनय, हनुमत प्रेस, कालाकांकर, संस्करण 1897, पृ० 12
 9. वही, पृ० 12
 10. वही, पृ० 12
 11. गिरिजादत्त शुक्ल और ब्रजभूषण शुक्ल, हिंदीकाव्य की कोकिलाएँ, भूमिका एवं प्रस्तुति गरिमा श्रीवास्तव, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ० 101
 12. सुमन राजे (संपा०), बीसवीं सदी का हिंदी महिला लेखन (खंड-1), साहित्य आकदमी, नई दिल्ली, संस्करण 2015, पृ० 39
 13. जगदीश्वर चतुर्वेदी एवं सुधा सिंह, स्त्री-काव्यधारा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ० 277
 14. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री-कवि-कौमुदी, प्रस्तुति बलवंत कौर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018, पृ० 178
 15. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री-कवि-कौमुदी, पृ० 206
 16. वही, पृ० 205
 17. वही, पृ० 207
 18. जगदीश्वर चतुर्वेदी एवं सुधा सिंह, स्त्री-काव्यधारा, पृ० 222
 19. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, स्त्री-कवि-कौमुदी, पृ० 211
 20. जगदीश्वर चतुर्वेदी एवं सुधा सिंह, स्त्री-काव्यधारा, पृ० 222
 21. वही, पृ० 160
 22. राजे, सुमन (संपा०), बीसवीं सदी का हिंदी महिला लेखन (खंड-1), पृ० 44

मो० 08267887301
kapilkumargautam1@gmail.com